अमृत वाणी

जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं।

- अमृतलाल नागर

अच्छी खबर

किरन्दुल विशाखापटनम एक्सप्रेस अंतत: 15 अगस्त से नियमित होने जा रही है। वैसे सांसद दिनेश कश्यप ने कुछ समय पूर्व ही यह आश्वासन दिया था लेकिन चूंकि बस्तरवासी रेल्वे के व्दारा बार बार धोखा खा चुके हैं अत: उनके लिए किसी आश्वासन पर आसानी से भरोसा करना थोड़ा सा मुश्किल था। अब चूंकि ईस्ट कोस्ट रेल्वे की ओर से अंतिम रुप से यह जानकारी दी गई है कि यह ट्रेन 15 अगस्त से प्रतिदिन नियमित रुप से चलेगी और उसके लिए बस्तरवासियों को कोई विशेष भाड़ा नही देना पड़ेगा, अत: यह क्षेत्र के लोगों के लिए निश्चित ही अच्छी खबर है।

दरअसल यह ट्रेन बस्तरवासियों के लिए मात्र सहूलियत ही नही बल्कि एक जरुरत भी है क्योंकि रात्रिकालीन यात्रा होने से एक तो हर किसी को सुविधा होती है और दूसरा जो अधिक महत्वपूर्ण है वह यह कि एक्सप्रेस ट्रेन होने से समय कम लगता है। खास तौर पर मरीजों के लिए यह ट्रेन विशेष राहत का माध्यम है। बस्तर से बड़ी संख्या में लोग विशाखापटनम में इलाज कराने जाते है। उनके लिए यह ट्रेन आपात परिस्थितियों से लेकर सामान्य परिस्थितियों तक में समय से लेकर तकलीफ कम करने के मामले में सहायक सिध्द हो सकती है।

वैसे यहां यह उल्लेख करना भी जरुरी है कि इस ट्रेन से बस्तरवासियों ने भले ही कुछ राहत पाई हो पर इसे इस्ट कोस्ट रेल्वे की ओर से कोई बहुत बड़ा उपकार कदापि नही माना जा सकता बल्कि यह कहना अधिक उचित होगा कि बस्तर को इस ट्रेन के अलावा रेल्वे से और भी कई ट्रेन सेवा पाने का हक है। रेल्वे ने बस्तर से लौह अयस्क परिवहन के बदले जो कुछ और जितना कमाया है उनके आगे दो चार रेल सेवा की सुविधा ऊंट के मुंह में जीरा के समान है। यही नही जो गिनती के ट्रेन बस्तर से चल रही है उन सभी से रेल्वे को फायदा ही हो रहा है। उसके बावजूद बस्तर को अब तक मिली कोई भी एक ट्रेन सेवा ऐसी नही है जो लंबे संघर्ष के बिना मिली हो। स्थानीय कतिपय जन प्रतिनिधियों से लेकर यहां के प्रबुध्द नागरिको तक को कई बार आंदोलन भी करने पड़े है। इस मामले में प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. रमन सिंह का भी भरपूर सहयोग एवं प्रोत्साहन रहा है। वर्तमान एक्सप्रेस ट्रेन को नियमित कराने में भी उनकी एवं बस्तर सांसद दिनेश कश्यप की महत्वपूर्ण भूमिका सराहनीय है।

जम्मू कश्मीर भारत का हिस्सा तो उसे विशेष राज्य का दर्जा क्यों

अब यह तो हमारी बुजुर्ग पीढ़ी ही बता सकती है कि देश की आजादी के चंद दिनों पहले पाकिस्तान के जन्म के समय हमारे तत्कालीन कांग्रेस नेताओं की ऐसी कौन सी मजबूरियां थी जब जम्मू.कश्मीर को संवैधानिक रूप से ष्विशेष राज्यष् का दर्जा देकर भारत के साथ रखा गयाए जब हमारा संविधान हर भारतीय नागरिक को एक समान संवैधानिक अधिकार देता है तो फिर कश्मीरियों को विशेष अधिकार क्योंघ् आरक्षण लागू रखने के बारें में तो अभी भी यह दलील दी जा रही है

देश का दलित वर्ग पिछले एक हजार साल से वाजिब सुविधाओं के लिए तरस रहा हैए इसलिए आरक्षण प्रथा

जारी रखना जरूरी हैए लेकिन कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा बनाए रखने के पीछे क्या तर्क और कारण हो सकते हैघ् इसीलिए अब देश की वर्तमान सरकार हमारे पूर्वज नेताओं की गंभीर गलतियों को सुधारने का बीड़ा उठाया हैए जिसमें जम्मू.कश्मीर से अनुच्छेद.370 व 35 हटाना शामिल है।

अब यह तो पूरा देश पिछले सत्तर सालों से महसूस कर रहा है कि जम्मू.कश्मीर राज्य में ऐसे कौन से ष्सुरखाब के पंखष् लगे है जो उसे ष्विशेष राज्यष् के दर्जे से नवाजा गया है। संविधान के इन अनुच्छेदों के कारण भारत का गैर कश्मीरी कोई भी नागरिक न तो इस राज्य में अपने लिए जमीन खरीद सकता हैए न घर बना सकता है और न अपने बच्चों को वहां पढ़ा.लिखा सकता हैए अर्थात् विश्व के अन्य देशों की तरह भारतियों के लिए भी जम्मू.कश्मीर महज एक पर्यटन केन्द्र बनकर रह गया है। आखिर ऐसा क्यों किया गयाए इसका हमारे इतिहास में किसी भी कारण का उल्लेख नहीं है।

पिछले कई दशकों से यह भी महसूस किया जा रहा हैए जम्मू.कश्मीर राज्य के जम्मू वाले क्षेत्र में चाहे राजनीति जागरूक होए जम्मू क्षेत्र में देश के अन्य राज्यों की तरह राजनीतिक चेतना भी हैए किंतु कश्मीर तो अपने आप में एक अलग ही प्रखण्ड हैए जहां क्षेत्र की किसी भी समस्या के नाम पर कांग्रेस सहित क्षेत्रीय दल एक साथ खड़े हो जाते हैए फिर वह चाहे पाकिस्तान समर्थित मुद्दा ही क्यों न होघ् इसी का फल है कि आज देश की सैना को विरोधी पार्टी की तरह कश्मीर में अपने देशरक्षा के महत्वपूर्ण दायित्व को अंजाम देना पड़ रहा है। कश्मीर में वहां के सभी क्षेत्रीय दल पाक समर्थित अलगाववादियों के साथ खड़े नजर आते है और पाक से पैसा लेकर भारतीय सेना पर पत्थरबाजी करने वाले युवा कश्मीरियों के प्रति सहानुभूति दिखाते नजर आते है।

अब धीरे.धीरे कश्मीर भारतीयों के लिए एक ऐसा ष्सिरदर्दष् बनता जा रहा हैए जिसका शीघ्र इलाज नहीं खोजा गया तो फिर यह ला.इलाज हो जाएगा और फिर भारत सरकार अपने आपको कोसने के अलावा कुछ नही कर पाएगीघ् अब यह बात अलग है कि आज जो केन्द्र की भाजपा सरकार इस मामले पर जितनी सक्रियता आज दिखा रही हैए उतनी यदि जम्मू.कश्मीर की पीडीपी सरकार के साथ भागीदारी छोड़कर साढ़े तीन साल पहले दिखाती जो संभव है अब तक इस महान समस्या का हल खोज लिया गया होताए भाजपा के संरक्षक संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉण् मोहनराव भागवत ने भी उस समय पीडीपी सरकार की भागीदारी का विरोध भी किया थाए किंतु साढ़े तीन साल का समय बर्बाद करने के बाद अब भाजपा व प्रधानमंत्री को संघ का मंत्र समझ में आ पायाए अब जबकि भाजपा की चुनावी ष्अग्निपरीक्षाष् में सिर्फनौ महीने का समय बचा हैए ऐसे में सरकार चाहे कि भारत में ष्समाधानष् नामक शिशु पैदा हो तो वह कैसे संभव हैए अब या तो सरकार देश की आंतरिक समस्या व चुनाव प्रचार की समस्या के लिए समय दे या जम्मू.कश्मीर जैसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का हल खोजेए यह कितना विसंगतिपूर्ण है कि एक ओर पाक अधिकृत कश्मीर भारत में विलय की मांग कर रहा हैए वहीं दूसरी ओर भारत अधिकृत कश्मीर पाक के प्रति अपनी सहानुभूति दर्ज करा रहा हैष्

इस प्रकार कुल मिलाकर यदि सरकार यह सोचती है कि देश की हर समस्या न्याय पालिका हल कर देगीए तो वह गलत फहमी में हैए सरकार को ही स्थिति व परिस्थिति के अनुरूप समस्या का हल खोजना पड़ेगाए किंतु यह पूरे भारतीयों की एक राय है कि एक देश में एक ही कानून होना चाहिए किसी को भी विशेषाधिकार या विशेष राज्य का दर्जा न हो!

- ओमप्रकाश मेहता

(ये लेखक के अपने विचार है)

छत्तीसगढ़ में एक दिन के कलेक्टर बनने का अभिनव प्रयोग

हमारे राज्य में प्रदेश की कुल आबादी का 28 प्रतिशत हिस्सा युवाओं का है। लगभग 70 लाख से अधिक युवा शक्ति द्वारा विकास और शौर्य के नए आयाम गढ़ रहा है। प्रदेश के युवा सिर्फप्रदेश में नहीं बल्कि देश एवं विदेशों में भी छत्तीसगढ़ का नाम रौशन कर रहे हैं। ऐसे ही छत्तीसगढ़ में विगत माह हुए एक दिन के कलेक्टर्स बनने की प्रतियोगिता का युवाओं में खासा उत्साह देखने को मिला।

आप सभी को याद होगा कि कुछ वर्षों पहले एक फिल्म रिलीज हुई थी, जिसका नाम था नायक। उस नायक फिल्म में अभिनेता अनिल

कपूर को एक दिन के मुख्यमंत्री बनाया गया था। फिल्म द्वारा बताया गया कि अगर व्यक्ति चाहे तो अपने ज्ञान, आत्मविश्वास और लगन से कुछ भी कर सकता है। इसी तर्ज पर राज्य शासन द्वारा एक दिन के शैडो कलेक्टर का चयन किया गया, जो पूरे 27 जिलों में कलेक्टर के साथ बैठकर, फिल्ड में जाकर जिला प्रशासन के कार्यो का संपादक किया और कामकाज को अच्छे से जाना। इस आयोजन से प्रदेश के युवाओं में खासा उत्साह, उमंग और जोश देखने को मिला।

छत्तीसगढ़ राज्य युवा आयोग एवं स्टेट डेव्हलपमेंट एंड रिसर्च सेंटर द्वारा यूथ स्पार्क प्रतियोगिता का आयोजन पूरे राज्य में वृहद स्तर पर किया गया। राज्य युवा आयोग द्वारा राज्य शासन की योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने के लिए एक नई पहल के रूप में यूथ स्पार्क.खेलेगा छत्तीसगढ़, जीतेगा छत्तीसगढ़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस ऑनलाईन प्रतियोगिता में ऑनलाईन क्विज् के अलावा सूचना प्रोद्योगिकी की अनेक विधाएं शामिल की गयी थी।

इस प्रतियोगिता को डिजीटल पर आधारित करके बनाया गया। यह प्रदेश के नाम एक नया कीर्तिमान है कि इतनी बड़ी संख्या में डिजीटल आधारित प्रतियोगिता का आयोजन छत्तीसगढ़ में किया गया। इसमें युवाओं ने न सिर्फ उत्साह के साथ भाग लिया बल्कि शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की भी जानकारी प्राप्त की। इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रदेश के 27 जिलों में शैडो कलेक्टर बनाकर प्रशासन के सर्वोच्च पद की चुनौतियों से अवगत कराया गयाए जो भारत के इतिहास में एक मिसाल बना। देश में पहली बार इस प्रकार के आयोजन से संपूर्ण राज्य के युवाओं में उत्साह और उमंग का वातावरण निर्मित हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य था कि यूथ स्पार्क प्रतियोगिता के माध्यम से छत्तीसगढ़ के लाखों युवाओं को सकारात्मक दिशा देने और राज्य शासन की योजनाओं से सीधे जोड़ने में सफल प्रयास किया गया।

प्रदेश के 27 युवाओं को इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रशासन की जिम्मेदारियोंए चुनौतियों और महत्ता को करीब से देखने एवं समझने का मौका मिला। इस आयोजन के माध्यम से युवाओं को अपने आत्मविश्वास पैदा करने व लक्ष्यों को प्राप्त करने कड़ी मेहनत से व्यक्तित्व का निर्माण करने का अवसर प्रदान किया। यह पहला मौका थाए जब इतने बड़े पैमाने पर मोबाईल के माध्यम से हुई प्रतियोगिता में युवाओं को शासन के कामकाज को समझने का मौका मिला। इस तरह के आयोजन से सम्पूर्ण राज्य शासन ने युवा कल्याण संबंधी नीतियों को वास्तविक के धरातल पर लाकर अधिकाधिक युवाओं को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रतियोगिता में संपूर्ण राज्य के 750 से अधिक महाविद्यालयों के 4 लाख से अधिक विद्यार्थी प्रतिभागी शामिल हुएए जिसमें से केवल 27 युवाओं को चुना गया। छत्तीसगढ़ के इतिहास में यह अब तक की सबसे बड़ी प्रतियोगिता थी। इस प्रतियोगिता को पास करना आसान नहीं था। देश के सबसे कठिन इम्तिहान भारतीय प्रशासनिक सेवा को पास करके आने वाले देशभर के सर्वोत्कृष्ट युवाओं को जिले की कमान सौंपी जाती है। यूथ स्पार्क प्रतियोगिता के उर्जावान युवाओं ने इम्तिहान के हर चरण में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देकर खुद को साबित किया। इस प्रतियोगिता को पांच चरणों में चरणबद्ध तरीके से तैयार किया गया था। प्रत्येक चरण को अलग.अलग नाम दिये गए थे। प्रथम चरण में युवा छत्तीसगढ़ष् कॉलेज स्तर पर आयोजित हुआ। दूसरा चरण हमर छत्तीसगढ़ यह ऑनलाइन मोबाईल से खेला गया। तीसरे चरण का नाम जानव छत्तीसगढ़ रखा गया थाए चैथे चरण का नाम जियो छत्तीसगढ़ और पांचवे चरण का नाम मोर छत्तीसगढ़ रखा गया था।

12 जनवरी 2018 को स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर राजधानी रायपुर में युवा उत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम में क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग शामिल हुए। कार्यक्रम में शैडो कलेक्टर के रूप में चयनित हुए शीर्ष तीन प्रतिभागियों को मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह द्वारा सम्मानित किया गयाए जिसमें प्रथम कवर्धा के शैडो कलेक्टर अभिषेक पाण्डेय, दूसरी धमतरी की शैडो कलेक्टर रेशमा साहू और तीसरे कांकेर के शैडो कलेक्टर संदीप द्विवेदी रहे। इस प्रकार के आयोजन से ना केवल प्रदेश के युवाओं को जानने और समझने का मौका मिलता हैए बल्कि रोजगार के नए आयाम खुलते हैं। राज्य शासन को चाहिए कि वह आगे और भी इसी तरह के आयोजन कराये और युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करें।

- तेज बहादुर सिंह भुवाल

(ये लेखक के अपने विचार है)

राजकाज

देवरिया कांड पर सवाल दर सवाल

देवरिया के मां विन्ध्यवासिनी संरक्षण गृह मामले में जहां डीपीओ को बर्खास्त किया गया वहीं चार लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। ऐसे में देवरिया के नवनियुक्त डीएम कौशल किशोर का कहना है कि पूर्व डीपीओ ने भारी गड़बड़ियां की थीं। यहां तक कि संरक्षण गृह का लाइसेंस पिछले साल ही रद्द हो चुका था लेकिन उसके बाद भी यहां बच्चियों को भेजा गया। जांच रिपोर्ट आने के बाद कई और की गिरफ्तारी संभव है। इस पर कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि इतना बड़ा सैक्स रैकेट और बच्चियों का यूं यौन शोषण बिना शासन.प्रशासन के लोगों की मिलीभगत से चल ही नहीं सकता है। अतरू अब मांग की जा रही है कि उन तमाम लोगों के चेहरों को बेनकाब किया जाना चाहिए जिनके सहयोग से यह घनौना काम किया गया। वहीं आशंका व्यक्त की जा रही है कि नौकरशाहों और सफेदपोश लोगों के नाम इस मामले में जुड़ने से जांच और कानूनी कार्रवाई भी प्रभावित हो सकती है। यह मामला योगी सरकार के लिए चुनौती बना हुआ है।

योगी सरकार ने निराश किया

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने योगी सरकार पर जनता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने का आरोप लगाते हुए कहा कि इस सरकार ने लोगों को निराश किया है। यह बात तो सही है कि जनता बदलाव चाहती हैए इसलिए उसने सपा को सत्ता से बेदखल करके भाजपा को अवसर प्रदान कियाए लेकिन अब जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी कोई खास बदलाव नहीं कर पाए हैं तो सवाल उठ रहे हैं कि आखिर प्रदेश का भला किससे होगाए क्योंकि कानून व्यवस्था को लेकर प्रदेश की चहुंओर बदनामी हो रही है। ऐसे में जानकारों की मानें तो जनता ने सपाए बसपा और अब भाजपा को मौका देकर देख लियाए लेकिन कोई भी विकास और कानून व्यवस्था के इम्तिहान में सफल होता हुआ दिखाई नहीं दिया। इस प्रकार सभी निराश कर रहे हैं।

भारत चीन और इंडोनेशिया की 90 फीसदी गरीबी कम हुई

विश्व बैंक ने हाल ही में अपनी रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि सौ साल पहले दुनिया के सभी देशों में भारी गरीबी थी। 1910 में दुनिया भर के 82.4 फ़ीसदी लोग घोर गरीबी में जीवन यापन करने विवश थे। दुनिया भर की 84 फ़ीसदी आबादी को दो टाइम का भोजन भी सहजता से उपलब्ध नहीं हो पाता था। अकाल के कारण खाद्यान्न और पेयजल की भारी किल्लत थी। सौ साल के इतिहास में दुनिया भर के देशों में लगभग 90 फ़ीसदी गरीबी कम हुई है। 2015 में जिन लोगों की आय 131 रूपए प्रतिदिन से कम की थी उन्हें घोर गरीबी रेखा के नीचे माना जाता था। 1990 तक 1ण्1 अरब लोग घोर गरीबी से बाहर आ गए हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार शेष लोगों को घोर गरीबी से उबरने में अभी और वक्त लगेगा 1910 की तुलना में 90 फ़ीसदी लोग घोर गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं। यह एक सुखद स्थिति है। भारतए चीन और इंडोनेशिया ने 2012 13 में सबसे ज्यादा आर्थिक प्रगति की और इसी साल इन तीनों देशों में गरीबों की आर्थिक स्थिति में बेहतर सुधार हुआ है। विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत चीन और इंडोनेशिया ने गरीबी से उबरने के लिए जो कार्य किए हैं उनकी विश्व बैंक ने खुलकर सराहना की है।

1910 के दशक में दुनिया भर के अधिकांश देश गरीबी और भुखमरी के बीच जीने के लिए विवश थेए गरीबों को भोजन भी उपलब्ध नहीं हो रहा थाए जिसके कारण 1914 में विश्व युद्ध शुरू हुआ जो 1918 तक चला। 1917 में रूसी क्रांति का मूल कारण भी भुखमरी था। रूस में भीड़ ने जार के महल में घुसकर जार परिवार के सभी सदस्यों की हत्या कर दी थी और लेनिन के नेतृत्व में कम्युनिस्ट शासन की स्थापना हुई थी। 1949 में चीन में भी लाल क्रांति हुई और उसके बाद कम्युनिस्ट शासन प्रणाली लागू हुई। सारी दुनिया पूंजीवाद और कम्युनिस्ट शासन प्रणाली के अंतर्गत चल रही थी। भारत ने 1947 में स्वतंत्र होने के बाद एक अलग रास्ता अपनाया साम्यवाद और पूंजीवाद के बीच का मध्य रास्ता अपनाते हुए भारत ने अपना विकास किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण अंग्रेजों को भारत को स्वतंत्र करना पड़ा। लेकिन जाते.जाते अंग्रेज भारत को हिंदू मुसलमान और भारत.पाकिस्तान के बीच बांट कर गए। 14 अगस्त को अंग्रेजों ने पाकिस्तान को स्वतंत्र किया। मोहम्मद अली जिन्ना को शपथ दिलाने के बाद 15 अगस्त को भारत को स्वतंत्रता दी। स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के नेता विभाजन को स्वीकार नहीं कर रहे थेए किंतु अंग्रेजों की जिद के कारण उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा। जिस समय भारत स्वतंत्र हुआ था उसके तुरंत बाद भारत में हिंदू मुस्लिमों के बीच दंगे हुए उस समय भारत के पास ना तो पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न था न ही भारत की आर्थिक स्थिति बेहतर थी। इसके बाद भी भारत ने विभिन्न चुनौतियों के बीच विकास पथ पर आगे बढ़ना शुरू किया।

भारत में शासन व्यवस्था की बागडोर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के हाथ में आई। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था का रास्ता चुना। 400 से ज्यादा रियासतों में बंटे भारत को एकजुट किया हिंदू और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव बनाया। इसी बीच 1962 के चीन युद्ध और 1965 के पाकिस्तान युद्ध से भारत की आर्थिक एवं सामरिक स्थिति भी कमजोर हुई इसी बीच राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध करना पड़ा। भारत ने पाकिस्तान से बांग्लादेश को अलग करा कर और 90,000 पाकिस्तानी सैनिकों का आत्मसमर्पण करा कर सारी दुनिया को चौंका दिया था। 1971 के पाकिस्तान युद्ध के बाद अमेरिका ने भारत के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध भी लगाए। इसके बाद भी 1980 आते.आते तक भारत हरित क्रांति के माध्यम से खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन गया। भारत ने लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को सुदृढ बनाने और संवैधानिक संस्थाओं को बनाकर उन्हें मजबूती देने का काम भी बखूबी किया। इसी बीच परमाणु और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी भारत ने अपने कदम आगे बढ़ाए। सीमित संसाधनों में भारत ने अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति और राजनीतिक दलों के सहयोग से विकास की गति को एक स्तर पर बनाए रखा। वैश्विक व्यापार संधि के बाद 2004 से 2014 के बीच भारत ने आर्थिक प्रगति के पिछले 60 सालों के रिकॉर्ड तोड़ते हुए आर्थिक प्रगति के नए नए कीर्तिमान स्थापित किए।

केंद्र सरकार ने मनरेगा और गरीबों की कल्याण की लगभग 4 दर्जन नई योजनाएं इन्हीं सालों में शुरू कीए जिसके कारण गरीबों के जीवन स्तर में बड़ी तेजी के साथ बदलाव आया और उनकी प्रतिदिन आय में भी काफी वृद्धि हुई। विश्व मानकों के अनुसार भारत के 90 फ़ीसदी लोग घोर गरीबी रेखा से बाहर आए हैं जो पिछले 70 सालों में भारत की प्रगति को दर्शाते हैं। नई पीढ़ी के सामने विकसित भारत की छवि है। इसके लिए आजादी के बाद 40 वर्षों तक हमारे शासकों और नीति.निर्धारकों ने विभिन्न चुनौतियों का जिस तरह सामने किया है वह असाधारण था। उसी का परिणाम है आज भारत दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले बराबरी से कदमताल कर रहा है। भारत आज दुनिया की छठवीं अर्थव्यवस्था बना हुआ हैए तो इसके पीछे पिछले 70 सालों का संघर्ष भी है। इसको नई पीढ़ी को जानना भी जरूरी है तभी हम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर पाएंगे।

- सनत जैन

(ये लेखक के अपने विचार है)

समय का चक्र

जब तुम्हें लगता है कि समय बहुत कम है, तुम या तो बेचैन होते हो या अत्यन्त सजगता की अवस्था में होते हो। दुखी या उत्सुक होने पर तुम्हें समय बहुत लम्बा लगता है। जब तुम प्रसन्न हो और जो कुछ कर रहे हो उसमें आनंद आ रहा है तब तुम्हें समय का आभास नहीं होता। इसी प्रकारए नींद में भी तुम्हें समय का आभास नहीं होता। जब तुम समय से आगे हो समय कटता ही नहीं और नीरसता अनुभव होती है। जब समय तुम्हारे आगे है तब तुम आश्चर्यचकित और स्तब्ध होते हो। तुम घटनाओं को आत्मसात नहीं कर पाते। गहन ध्यान में तुम ही समय हो और सब कुछ तुम्हारे ही अहदर घटित हो रहा है। घटनाएं तुममें ऐसे घट रही हैं जैसे आसमान में बादल गुजरते हैं। जब तुम समय के साथ होते हो तुम ज्ञानी हो तुम्हारा मन शांत है। जब मन प्रसन्न होता है तब यह विस्तृत होता है तब समय भी बहुत छोटा लगता है। जब मन दुखी होता है संकुचित होता है तब समय बहुत लंबा प्रतीत होता है। जब मन समचित्त है स्थिर है तब यह काल के परे है। इन दोनों स्थितियों से बचने के लिए कई व्यक्ति शराब या निद्रा का सहारा लेते हैंए परंतु जब मन जड़ या बेसुध होता हैए तब यह अपनी ही अनुभूति नहीं कर सकता। समाधि ही असल शांति हैए जो मन और समय के परे है।

जैसे मन समय को अनुभव करता है वैसे इस क्षण का भी अपना एक मन है। एक विराट मनए जिसमें व्यवस्था करने की अपरिमित और असीम योग्यता है। एक विचार और कुछ नहीं समय के इस क्षण में एक तरंग है और समाधि के कुछ ही पल मन को ऊर्जा से भर देते हैं। निद्रावस्था के पहले और जिस पल तुम नींद से जगाते हो सचेतनता के उन धूमिल क्षणों में समय के परे जाने का अनुभव करो। जीवन साकार व निराकार का मिशण्रहै। भावनाओं का कोई आकार नहीं परंतु उनकी अभिव्यक्ति साकार होती है। आत्मा का कोई रूप नहीं परंतु उसका निवास साकार में है। इसी तरहए ज्ञान और कृपा का भी कोई रूप नहीं लेकिन उनकी अभिव्यक्ति किसी रूप द्वारा ही होती है। निराकार को हटा देने से तुम जड़ बनते हो. सांसारिक और संवेदनशील। आकार को छोड़ देने से तुम एक भ्रमित तपस्वी अत्यधिक सपने देखने वाले या भावनात्मक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति बन जाते हो।